प्रकाशनार्थ

प्रदूषण मॉनिटर्स पर हरित कौशल विकास कार्यक्रम की मान्यताः वायु और जल प्रदूषण और ईटीपी, एसटीपीः संचालन और रखरखाव।

पटना**, 22** जनवरी। आद्री स्थित सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एनर्जी एंड क्लाइमेट चेंज (सीईईसीसी) ने आज प्रदूषण मॉनिटर्स वायु और जल प्रदूषण तथा ईटीपी, एसटीपी: ऑपरेशन और रख-रखाव पर ग्रीन स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम (GSDP) के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया। यह प्रशिक्षण बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और तरुमित्र के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर 21 प्रशिक्षुओं को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) स्तर का प्रमाण पत्र पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह द्वारा प्रदान किया गया।

कौशल विकास प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिससे व्यक्ति की क्षमता का निर्माण हो सके और एक संसाधन कुशल पूल का निर्माण हो सके जो भविष्य में पर्यावरण संसाधन प्रबंधन में योगदान दे सके। यह शहरी क्षेत्रों में वायु और जल प्रदूषण की वर्तमान स्थिति को दूर करने के लिए पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और भारत सरकार की एक अनूठी कौशल विकास पहल है। केंद्र ने बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, तरुमित्र, जीसीपीसी, और बेउर, त्रिपोलिया अस्पताल और कुर्जी अस्पताल के सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स के सहयोग से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया है।

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने पर्यावरण के अनुकूल विकास और पर्यावरण के संरक्षण में इसके प्रभाव पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संदेश देते हुए तीन बातें बताई। पहला- जलवायु परिवर्तन का प्रभाव इस वक्त हम सब पर पड़ रहा हैं और आने वाले समय में इसका और भी बुरा प्रभाव होगा, दूसरा- जलवायु परिवर्तन का प्रभाव मानवसहित सभी जीव जन्तुओं पर पड़ा है और तीसरा- जलवायु परिवर्तन प्रबंधन किसी एक संस्था का जिम्मेवारी नहीं है, बल्कि हरएक आदमी की जिम्मेवारी है। स्वागत भाषण में, सीईईसीसी, आद्री के निदेशक प्रोफेसर प्रभात पी घोष ने बिहार में ऐसे कौशल विकास और पर्यावरणीय मुद्दों की प्रासंगिकता के बारे में प्रकाश डाला। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के अध्यक्ष प्रोफेसर अशोक कुमार घोष ने अपने संबोधन में प्रदूषण मॉनिटर के महत्व और विभिन्न जल प्रजातियों के महत्वपूर्ण मुद्दे, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और जैव विविधता के नुकसान पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य सरकार के नेतृत्व में वायु और जल प्रदूषण पर अनुसंधान और कार्य के कार्यान्वयन में ऐसे कुशल मानव संसाधन की भविष्य की मांग को इंगित किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि प्रत्येक अस्पताल और अन्य व्यावसायिक सुविधाओं को अपने अपशिष्ट प्रकार के आधार पर ईटीपी/एसटीपी स्थापित करना चाहिए। श्री सुब्रमण्यम

चंद्रशेखर, सदस्य सचिव, बीएसपीसीबी ने बिहार में प्रशिक्षित सीवरेज या अपशिष्ट उपचार संयंत्रों की आगामी मांग पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य के विभिन्न हिस्सों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन कार्य में ऐसे कुशल मानव संसाधनों की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, पटना के प्रभारी निदेशक डॉ. गोपाल शर्मा द्वारा विशेष व्याख्यान भी दिया गया। उन्होंने गंगा नदी के अपशिष्ट प्रबंधन और कायाकल्प के लिए नमामि गंगे मिशन के तहत चल रही गतिविधि को साझा किया। इस अवसर पर डॉ. सुनीता लाल और आद्री के अन्य संकाय सदस्य भी उपस्थित थे।

(अंजनी कुमार वर्मा)